युवाओं का आहवान

आज समाज की हालत देखकर कभी आपने गहराई से सोचा? ये धर्म के नाम पर हिंसा, आचरणहीन प्रभुत्व, विवेकहीन आनन्द, मानवता शून्य विज्ञान, सदाचार विहीन व्यापार, अंधश्रद्धायुक्त भक्ति, सिद्धांतहीन राजनीति। यह सारे संसार की रग-रग में कण-कण में समा चुके हैं। अराजकता, अनैतिकता अत्याचार, भ्रष्टाचार, हिंसा का तांडव नृत्य सरे आम हो रहा है कौन रोकेगा इसे? किसमें दम है? कहने को तो कोई भी कहता हो कि हम यह करेंगे हम वह करेंगे, हम यह कर सकते हैं, हम वह कर सकते हैं, हम वो कर सकते है।पर यथार्थ के धरातल पर देखें तो यह सिर्फ और सिर्फ आप के मजबूत कन्धे ही यह जिम्मेवारी उठा सकते हैं।

हमारे प्रिय युवा भाइयों यह कार्य अगर अभी नहीं हुआ तो आगे चलकर तो असम्भव हो जाएगा। इस समय स्वयं भगवान आपका आह्वान कर रहा न सिर्फ आह्वान कर रहा है वरन साथ भी दे रहा है।अगर अब भी आप जाग्रत नही हुए तो बाजी हाथ से निकल जाऐगी। यह विशाल कार्य बिना तुम्हारे सम्भव ही नहीं।तुम अपनी उपयोगिता को समझो। अपना मूल्यांकन खुद करो। देखो अपने आपको आप में अपार उर्जा है। मत समझो तुम अकेले हो, तुम सर्वशक्तिवान के बच्चे मा0 सवशक्तिवान हो। एक अकेला सूर्य सारे जगत को रोशन कर सकता है, अपने आप में आ जाए तो संसार के लोगों का जीना मुश्किल कर दें। एक शेर जंगल को हिला कर रख देता है। अकेला सागर अनेक नदियों को एक साथ थाह लेता है।अकेला चन्द्रमा करोडों तारों के प्रभाव को धूमिल कर देता है। एक ब्रह्मा समग्र मानव जाति पर भारी,हजारों वर्षो से चली आ रही कुरीतियों को खत्म कर नई क्रान्ति ला देता हैं। एक बल एक भरोसा की तपस्या जन्म जन्मान्तर के पाप ध्वस्त कर देती है, फिर तुम क्यों दिलशिकस्त हो रहे हो? तुम अकेले कहाँ तुम्हारे साथ जग परिवर्तक, विश्व परिवर्तक, विश्व विधाता, नव युग रचता परम कल्याणकारी स्वंय भगवान है,तुम अकेले नहीं यह कार्य तुम्हीं कर सकते हो ।

बुजुर्गो को अनुभवों का धनी तो कहा जा सकता है पर कुछ कर गुजरने का जज्बा,आसमान छूने की तमन्ना,सितारों को पाने का अरमान,सागर को थाह लेने का उत्साह ,बुलन्दियों पर पहुँचने का जुनून, शारीरिक कर्मठता की कमी के कारण उनसे यह कार्य संभव नहीं हो सकता।पर तुममें पहाड़ों की अडिगता ,वायु की गतिशीलता,अग्नि सम प्रखरता, पानी सम स्पष्टता होने के कारण यह पुनीत कार्य तुम्हीं कर सकते हो।

इसलिए उठो! और आज से ही एक नवीन कार्य की शुरूवात करो,कल किसने देखा है? कल तो परिस्थितियां और विकरालता की ओर बढ़ चलेगी।कल सब कुछ तुम्हारे अनुकूल रहेगा ही,इस धोखे में मत बैठना,कल पर किसी का अधिकार नहीं। साधन और सुविधाओं का कब मटिया मेट हो जाये कुछ पता नहीं कर्मेन्द्रियाँ कब साथ चलने को मना कर दें किसको पता है? श्वाँशों कब हम से मुँह फेरने को तैयार हो जाये कोई बता नहीं सकता।कौन जानता कर्मभोग राह में कब बाधा बनकर खड़ा हो जाये। सगे संबंधी कब विरोधी बन जायें कुछ नहीं पता। प्रकृति अपनी मर्यादा तोड़ कर कब तांडव नृत्य करना शुरू कर दे कुछ भरोसा नही उसका। मौत कब गले लगाने को तैयार हो जाये क्या पता? इसलिये कब का इन्तजार छोड़ आलस्य को दूर भगाकर अपने फर्ज के प्रति जाग्रत हो जाइये।

बहादुर अपना रास्ता खुद बनाते हैं। लीक से हटकर चलते हैं भेड़ चाल भी कोई जीवन है? दिल शिकस्ती,बुजदिली निकाल फेकियें,अपने आपको पहचानिये। नये विश्व का सृजन करने की आपमें अदम्य

शक्ति है। बस आप हिम्मत का एक कदम बढ़ाइये रास्ता अपने आप बनता चला जायेगा,काफिला अपने आप बढ़ता चला जाऐगा।इसलिये रूको मत आगे बढो, बढते चलो।

यह जीवन समाज की देन है इसलिए समाज का तुम पर कर्ज है। उसके उपकारों का बदला चुकाना ही है तुम्हें।इसलिए उठो समाज के लिए,मानवता के हित में कुछ कर दिखाओ । यही समय है समाज को तुम्हारी जरूरत है। उस चिड़िया की तरह अपने फर्ज के प्रति सुजाग हो जाइये।उस की कहानी सुनी है ना कि जब जंगल में जब आग लगी तो सभी जीव जन्तु भाग गये पर चिड़िया बार –2 नदी पर जाती मुँह में पानी भरकर लाती आकर जंगल में उड़ेल देती थी किसी ने उससे पूँछा क्या तुम्हारे एक –2 बूँद पानी से जंगल की आग बुझ जायेगी? उसने कहा मैं अपना फर्ज पूरा कर रही हूँ।आग का कुछ हुआ हो या ना हुआ हो पर चिड़िया ने जंगल के प्रति अपना फर्ज निभाया। सीखो उस दीपक से ,जिसने अस्त हो रहे सूर्य को आश्वास्त किया कि आप निश्चिन्त होकर जाइये, आपके जाने के बाद आपका कार्य मैं सँभालूंगा। तुम उठो और भगवान और संसार को आश्वास्त कर दो कि जब तक जग से एक–2 बुराई को जड़ से खत्म नहीं कर लेते तब तक चैन से नहीं बैठेंगें।आराम हमारे लिए तब तक हराम है जब तक नये विश्व का नव निर्माण हो जाता,मर मिटेंगे पर कदम पीछे नहीं हटायेंगे ।

अरे भाइयों जिस तरह सभी जीते हैं यह भी कोई जीवन है? पैदा होना कुछ कमाना खाना और मर जाना ,कितने लोग रोज पैदा होते हैं और रोज मरतें हैं किसी को कोई याद करता है? याद भी क्यों किया जाये, याद करने वाला कोई कार्य तो करके गये नहीं ।

अरे सर्वश्रेष्ठ जीवन लेकर और सर्वशक्तिवान का साथ लेकर तीनों कालों का, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का ज्ञान लेकर भी अगर साधारण ही जीवन जिये तो धिक्कार है ऐसी जिन्दगी पर। कितने साधारण लोग भी बड़ा काम कर जाते हैं और तुम बडे होकर भी साधारण जीवन जी रहे हो ?

साधन सुविधाओं के माया जाल से निकलो, संसारिक संबंधों की सीमाओं से अपनी मानसिकता को निकालो, अपने आप को फैशन व मनोरंजन के चंगुल से छुड़ाओ,दोस्तों व इधर–उधर की बातों से अपने अनमोल समय को बचाओ। बनाओ एक अद्भुत व्यक्तित्व, जिसका नाज हो भगवान को,जिस पर नाज हो ब्राह्मण परिवार को, नाज हो दुनिया को,नाज हो खुद आपको। अपने आप को साधारण मत समझो, और न ही साधारण बनाओं। कुछ करो जो आदर्श हो। कमाल करने के लिए कमजोरी और कट्टरता दोनों को छोड़ो,कायरता व कठोरता को भगाओ,करूणा व कुशलता को पकड़ो और लगा दो संसार की नैया किनारे।परेशान व हैरान मत होइए, ये कार्य अनेक बार तुमने किया है और हर बार विजय तुम्हारी ही हुई है।

उठो ! चलो ! कुछ कमाल करो, कुछ नया करो, कुछ कर दिखाओ,कुछ अच्छा करो,कुछ विशेष करो कुछ बेमिसाल करो,कुछ यादगार करो।